© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में आधुनिक बोध

कृष्ण चन्द यादव

हिन्दी विभाग,
जयप्रकाश विश्वविद्यालय,
छपरा (बिहार)

शोध आलेख सार– रचनाकार के लिए वह अत्यन्त आवश्यक भी होता है। कृति को अधिक से अधिक प्रमाणिक और विश्वसनीय बनाने के लिए वह उस काल विशेष की मूलभूत विशेषताओं को रचना में और विश्वसनीय बनाने के लिए वह उस काल विशेष की मूलभूत विशेषताओं को रचना में उतार देता है। पात्र सामाजिक, ऐतिहासिक या राजनीतिक हों उनका लक्ष्य मात्र वर्तमान समाज को मार्गदर्शन करता है।

मुख्य शब्द– सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, उपन्यास, निम्न–मध्यवर्गीय।

रचनाकार खुद अकेला नहीं चलता। वह अपने साथ उस परिवेश को भी लेकर चलता है, जिसमें वह जीता रहता है या उसके प्रतिछवि पात्र भोगे रहते हैं। रचनाकार के लिए वह अत्यन्त आवश्यक भी होता है। कृति को अधिक से अधिक प्रमाणिक और विश्वसनीय बनाने के लिए वह उस काल विशेष की मूलभूत विशेषताओं को रचना में और विश्वसनीय बनाने के लिए वह उस काल विशेष की मूलभूत विशेषताओं को रचना में उतार देता है। यही विश्वसनीयता आज की आधुनिक युग के सांस्कृतिक परिवेश, सामाजिक गठन वर्गीय विभेद तथा राजनीतिक व्यवस्था को खुलेआम दर्शाती है।

इस दृष्टि में नागर जी की पात्र सृष्टि अद्‌भुत है। वे समाज से ऐसे पात्र चुनते हैं कि जिन्हें पढ़कर पाठक विस्तृत दुनियाँ के प्रति चौकन्ना हो जाता है। नागर जी के उस कौशलता को डॉ. रामविलास शर्मा जी अपने शब्दों में व्यक्त करते हुए लिखते हैं– ''पात्रों की संख्या, उनकी

विविधता, अनुकरण अथवा प्रतिच्छवि की सजीवता के विचार से अमृतलाल नागर हमें ऐसे जीते–जागते और कोलाहलमय संसार में ला खड़े करते हैं जिसके समृद्धि की तुलना बाल्जाक की रचनाओं से ही हो सकती है। लेखक के पास ऐयारी की ऐसी झोली है जिसमें पात्रों की सैकड़ों मूर्तियां भरी हुई हैं और वह संतुलन का भी विचार न करके उन्हें एक के बाद एक निकालता चला जाता है फिर भी झोली खाली नहीं होती। पात्र अकेले नहीं आते, वे अपने साथ अपना पूरा वातावरण लाते हैं– ''पुरानी हवेली, पीपल के नीचे का चबूतरा, नदी का किनारा इत्यादि।''[1] इस प्रकार नागर जी की रचना लोक इन तमाम विचारों से भरा पड़ा है। इसको पढ़कर पाठक अवाक् होकर उनके कौशल को देखता है। उन्होंने सिर्फ पुरुष पात्रों को ही नहीं गढ़ा है, उनके उपन्यासों में नर के साथ नारी पात्र भी हैं। वैसे कोई भी रचनाकार इस बात की चिंता नहीं करता है कि उसके पात्र केवल नर ही हों या नारी ही हों। यह तो उसके जीवन अनुभवों पर निर्भर होता है। समाज के जितने व्यापक अनुभव होने, उतनी ही व्यापकता पात्रों में परिलक्षित होगी। नागर जी में वह व्यापकता है, जिसे उन्होंने अपने उपन्यासों में निचोड़ा है।

नागर जी का प्रथम उपन्यास 'महाकाल' में अकाल की मार से 'झखोले खाये निम्न–मध्यवर्गीय लोगों की कहानी है। उपन्यास का प्रमुख पात्र पाँचूगोपाल का भाई शीबू पेट भरने के लिए अपनी पत्नी को बेचना चाहता है, उसकी माँ जब इस हेय कृत्य के लिए मना करती है तो वह अपनी सम्पत्ति बताकर उस पर अपना अधिकार जताता है ''ये मेरी वस्तु है, मैं इसे बेचूँगा। मुझे भूख लगी है, चावल ला।''[2] शीबू के इस अत्यचार के लिए उसकी पत्नी क्षमा नहीं करती, बल्कि मध्यवर्गीय नैतिकता को तिलांजलि देकर उसके मुँह पर तमाचा मारती है। नागर जी ने इस घटना को बहुत ही स्वाभाविक प्रतिक्रिया के रूप में चित्रित किया है।

अपने प्रथम उपन्यास में ही नारी पात्र का इतना उत्कर्ष दर्शाया है, उतना ही श्लाघनीय है पाँचू गोपाल का चरित्र। वह शोषकों से शोषित लोगों को बचाना चाहता है। रास्ते में मिले अनाथ बच्चे को अपनी पत्नी के हाथों में देते हुए वह कहता है कि– ''हमारा बलिदान, हमारी कर्मव्यता और हमारी क्रान्ति इस बच्चे की दुनियाँ को इन्सान के रहने योग्य बनायेगी, जिसमें अमीर, गरीब न होंगे, रंगभेद न होगा, धर्मभेद न होगा, जातीयता और राष्ट्रीयता न होगा, एक दुनियाँ होगी, एक मानव समाज होगा।''[3]

बूँद और समुद्र' में महिपाल की अद्‌भुत सृष्टि है। वह एक साहित्यकार होकर आधुनिक व्यवस्था को अत्यन्त कठोर शब्दों में टोंकता है। ढोंगी, मक्कार समाजवादियों को खुलेआम भद्‌दी गालियों से बौछारता है। डॉ. शीला ने महिपाल से पढ़ी–लिखी स्त्रियाँ स्वतन्त्र हैं, कहने पर महिपाल कहता है– ''मुट्‌ठी भर औरतें आजाद हैं, जिनमें से एक तुम हो जो बत्तीस रुपया फीस कमा लेती हो। मगर बहुतायत तो उन्हीं स्त्रियों की है जिन्हें जल–जलकर मरने के लिए मजबूर होना पड़ता है।''[4] इस उपन्यास में नागर जी ने ताई जैसी नारी पात्र का भी निर्माण किया है जो आधुनिक समाज में सब कुछ रहकर भी नाखुश रहती है। सारे मुहल्ले में नामी लोगों पर जादू–टोना कर उनका अहित सोचती रहती हैं। ताई से अलग और विशिष्ट 'नाच्चौ बहुत गोपाल' की 'निर्गुनिया' है। वह अपने जीवन संघर्षों से जूझकर अपने समाज से चिढ़ती नहीं है, चिढ़ाती भी नहीं हैं। वरन् उसमें पूरी जिजीविषा के साथ जीना चाहती हैं। मेहतर मोहना से शादी कर लेने के बाद उसकी माँ उसे पाखाना साफ करने का आदेश देती है। उस सम्बन्ध में निर्गुनिया नागर जी से कहती है– ''देख रे मोहन! तेरे मोह से मैं मेहतरानी तो बन गई हूँ, पर रंडी नहीं बनूंगी, रंडी किसी कीमत पर नहीं बनूँगी। मेहतरानी की अपनी मरजाद होती है बाबूजी। वह ईमानदारी का धंधा करके अपना पेट पालती है, रंडी भड़ुए जैसे विचारों–करमों वाले लोग लुगाईयों में अपनी आबरू की वो कीमत नहीं होती जो हमारे मनों में है। हम अपने तन की मालिक हूँ। बिकाऊ या लुटाऊ माल नहीं है। मन का अहसास क्या कुछ कम होता है, बाबूजी।''[5]

'अमृत और विष' में अनेक पात्र ऐसे हैं, जो आधुनिक समाज में अपनी छाप छोड़ते हैं। अरविंद शंकर एक उपन्यासकार के रूप में सामने आते हैं तो उनके उपन्यास में रमेशचन्द्र गौड और लच्छू जैसे पात्र भी आते हैं। वे सद्‌चरित्र अपने जीवन का अलग–अलग रास्ता चुनकर समाज के विकास की दोनों दिशाओं को स्पष्ट करते हैं। 'मानस का हँस', 'खंजन नयन' एवं 'शतरंज के मोहरे' उपन्यासों में जिन ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से नागर जी ने उस समाज के अन्तर्विरोधें को देखा है, वह अपने आप में एक महत्वपूर्ण कार्य है। 'तुलसीदास' और 'सूरदास' ने मध्यकालीन बोध को नये सिरे से देखा है। साथ ही मुगलकालीन भारत की सोई हुई आत्मा को झकझोरा है। उन महान पुरुषों की आध्यात्मिक छाप आज भी स्मरणीय है।

आधुंनिक भारतीय समाज में अपना छाप छोड़ने वाली नारी पात्रों में ताई, निर्गुनिया के बाद तीसरी महत्वपूर्ण पात्र है 'अग्निगर्भा' की 'सीता पाण्डे'। यह सीता, पढ़ी–लिखी लड़कियों की समस्याओं से पाठकों को अपनी सम्पूर्णता में परिचित कराती है। वह एक मध्यवर्गीय परिवार की पढ़ी–लिखी लड़की होने के कारण सोचती है कि एक पढ़े–लिखे लड़के से विवाह हो जाये। अपनी सहेलियों के प्रेम विवाह को देखकर सीता सोचती है कि– ''कैसी सौभाग्यशालिनी है मित्रों हे राम, तुमने अपने जन्म दिन को ही कृपा पूर्वक मेरा जन्म दिन भी बनाया है, तो मुझे अभागी न बनाना। मुझे कुसुम जैसा कुबेर पति नहीं चाहिए। मित्रों जैसा भाग्य–काम्य होते हुये भी मेरा जैसा इष्ट नहीं। हाँ, जीवन साथी इसके जैसा ही विद्वान् और सरल व्यक्ति देना, झोपड़ी में भी महलों से अधिक सुख पा लूँगी तुम्हारी कृपा से।''[6] महज सीता पाण्डे का दुर्भाग्य कि उसे पति के नाम पर कलंक मिला है। एम्.ए., पीएच्.डी. तक पढ़ी–लिखी होने पर भी सीता को उसका पति रामेश्वर दुधारु गाय समझता है। नागर जी इस तथ्य से परिचित हैं कि प्रेमचन्द युग से लेकर छठे सातवें दशक तक हिन्दी कथा साहित्य में ये तथ्य बार–बार उठते रहे हैं। नारी को आर्थिक रूप से सृदृढ़ करके उसे शोषण से मुक्त किया जा सकता है। परन्तु यह सही नहीं है। असल में सामंती संस्कार ही नारी को दुर्बल बना देती है। इसी प्रकार की 'सुहाग के नूपुर' में 'माधवी' वेश्या आधुनिक समाज से अपने पतिता और एक निष्ट प्रेम की मांग करती हुई दिखाई देती है। कुलवधू की मर्यादा को बचाने वाली कन्नगी आधुनिक समाज को एक मार्गदर्शिका बन सकती है। उपन्यास ऐतिहासिक होने पर यह वर्तमान समाज को पाठ सिखाने वाला है।

अमृतलाल नागर जी के अन्तिम दो उपन्यास 'करवट' तथा 'पीढ़ियाँ' में चार पीढ़ियों की ऐतिहासिक परम्परा का मूल्यांकन है। शोषित अंग्रेजों को खुशामद करके 'रायबहादुरी' की उपाधि हासिल करने वालों 'हिन्दू–मुसलमान जातीय भेदभाव को नागर जी ने अत्यन्त मनोयोग से चित्रित किया है। हाजी साहब के खानदान में कोई बादशाह नहीं रहा, वह वैसी ही रहे जैसे एक हिन्दू रहता है। फिर भी अपने आपको एक बड़े नवाब के वंशज समझते हैं और हिन्दुओं को दुत्कारते रहते हैं हाजी साहब कहते हैं– ''ये आज गलत फरमा रहे हैं जनाबे आला। आप बुतपरस्त कौम हैं और हम बुतशिक्त कौम के। आप पूरब में सिर झुकाते हैं और हम पश्चिम में सिर झुकाते हैं। हमारा आपका मेल हो ही नहीं सकता। लार्ड मिन्टो ने सेपरेट–इलेक्ट्रोरेट

चलाकर बहुत अच्छा किया।''[7] इस प्रकार पं. अमृतलाल नागर जी ने अपने उपन्यास में पात्रों के माध्यम से आधुनिक नये समाज को किसी–न–किसी प्रकार से समझाने का प्रयास किया है। उनके पात्र सामाजिक, ऐतिहासिक या राजनीतिक हों उनका लक्ष्य मात्र वर्तमान समाज को मार्गदर्शन करता है। उनसे समाज सीखता भी जरूर है।

संदर्भ सूची

1 डॉ. रामविलास शर्मा– 'आस्था के सौंदर्य' – पृ. 135

2 महाकाल–पृ. 140

3 महाकाल– पृ. 164

4 बूँद और समुद्र– पृ. 91

5 नाच्चौ बहुत गोपाल– पृ. 334–335

6 अग्निगर्भा– पृ.14

7 पीढ़ियाँ– पृ. 155